पंचायत राज क्या है ? (What is Panchayat Raj ?)

कुछ व्यक्तियों का विचार है कि पंचायत-राज का तात्पर्य गाँव पंचायतों, पंचायत समितियों तथा जिला-परिषदों के उन संगठनों से है जो राज्य सरकारों की सलाहकार तथा सहयोगी संस्थाओं के रूप में कार्य करें। दूसरा मत है कि पंचायत-राज का तात्पर्य प्रमुख रूप से गाँव पंचायतों तथा जिला परिषदों द्वारा अपने-अपने स्तर पर स्वयं एक सरकार के रूप में कार्य करना तथा गौण रूप से राज्य सरकार को सहायता देना है। स्वर्गीय श्री जयप्रकाश नारायण के अनुसार दूसरा मत ही पंचायत-राज की प्रकृति को सही रूप से स्पष्ट करता है।

पंचायत राज की व्यवस्था महात्मा गाँधी की इस धारणा पर आधारित है कि देश के सामाजिक-आर्थिक पुनर्निर्माण का कार्य नीचे से आरम्भ होना चाहिए (building from below)। इसका तात्पर्य है कि विकास की योजनाओं, देश की आवश्यकताओं तथा नीतियों का स्वरूप जन-सामान्य द्वारा निर्धारित किया जाय तथा केन्द्रीय सरकारी तन्त्र उसी के अनुसार कार्य करें। गाँधीजी कहा करते थे कि "वह सरकार सबसे अच्छी है जो सबसे कम शासन करती है।" इसका तात्पर्य है कि नागरिकों के जीवन में राज्य का हस्तक्षेप कम से कम होना चाहिए, व्यक्ति अपने जीवन को स्वयं नियन्त्रित करना

Created By Sign Doc

सीखे तथा अनुशासन उन पर थोपा हुआ न हो बल्कि वे स्वयं अनुशासन को जन्म दें। ऐसे शासन की बागडोर सरकार से जनता की ओर नहीं बल्कि जनता से सरकार की ओर होगी। यही नीचे से ऊपर की ओर होने वाला ग्रामीण पुनर्निर्माण है।

पंचायत-राज की धारणा गाँधीजी द्वारा प्रस्तुत समाज और सरकार से सम्बन्धित इन दोनों धारणाओं का ही एक समन्वय है। इस दृष्टिकोण से श्री जयप्रकाश नारायण के शब्दों में "पंचायत-राज का आरम्भ एक ऐसे प्राथमिक समुदाय से होता है जो साथ-साथ रहने वाले, साथ-साथ कार्य करने वाले सहयोगी आधार पर व्यवस्था करने वाले तथा कठिनाई की स्थिति में दूसरे समुदायों से सहयोग करने वाले परिवार का एक संगठन है। इस प्रकार अनेक समुदायों का सहयोगी आधार पर बना वृहत् संगठन ही पंचायत राज है।"

Created By Sign Doc